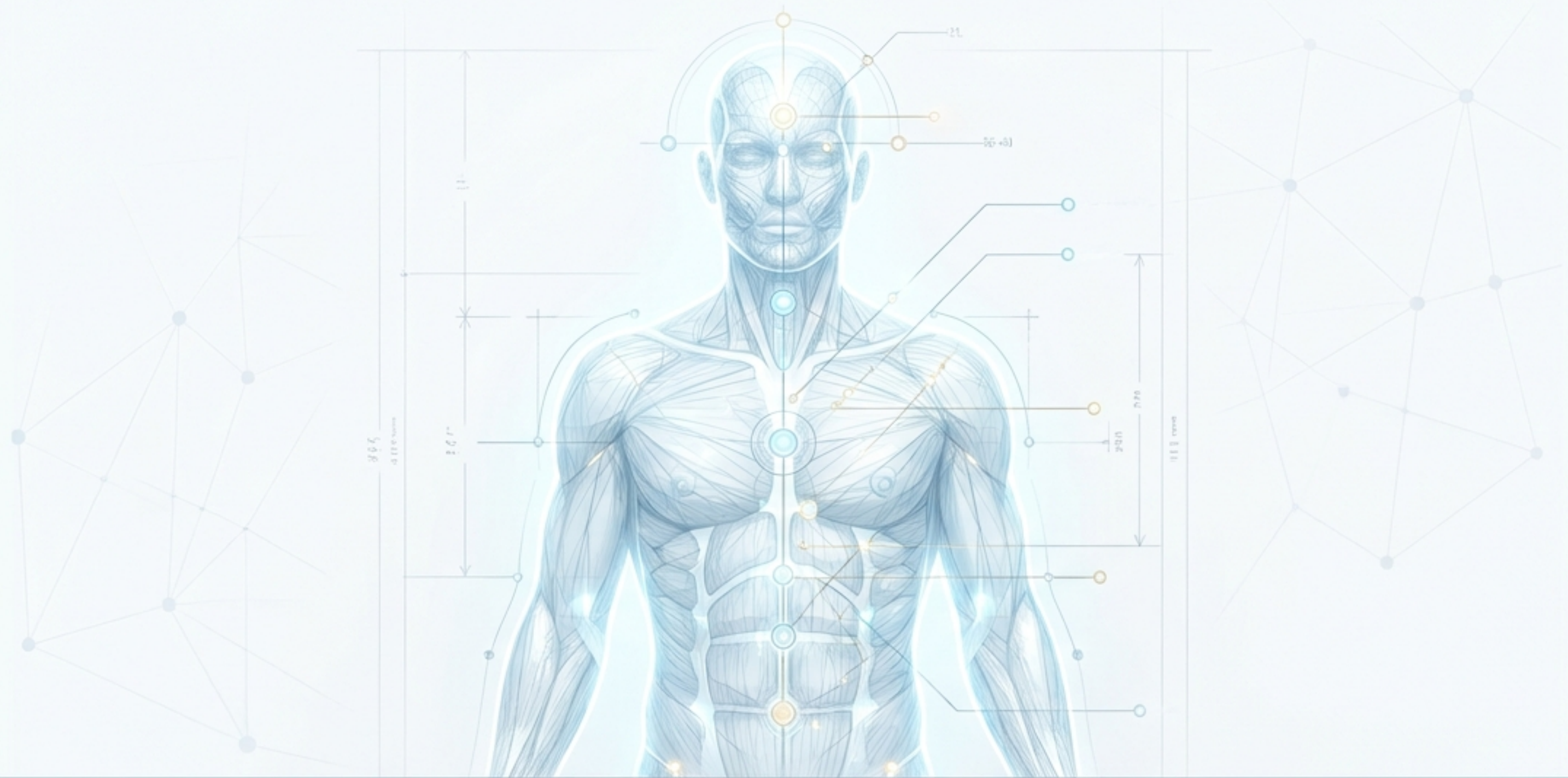


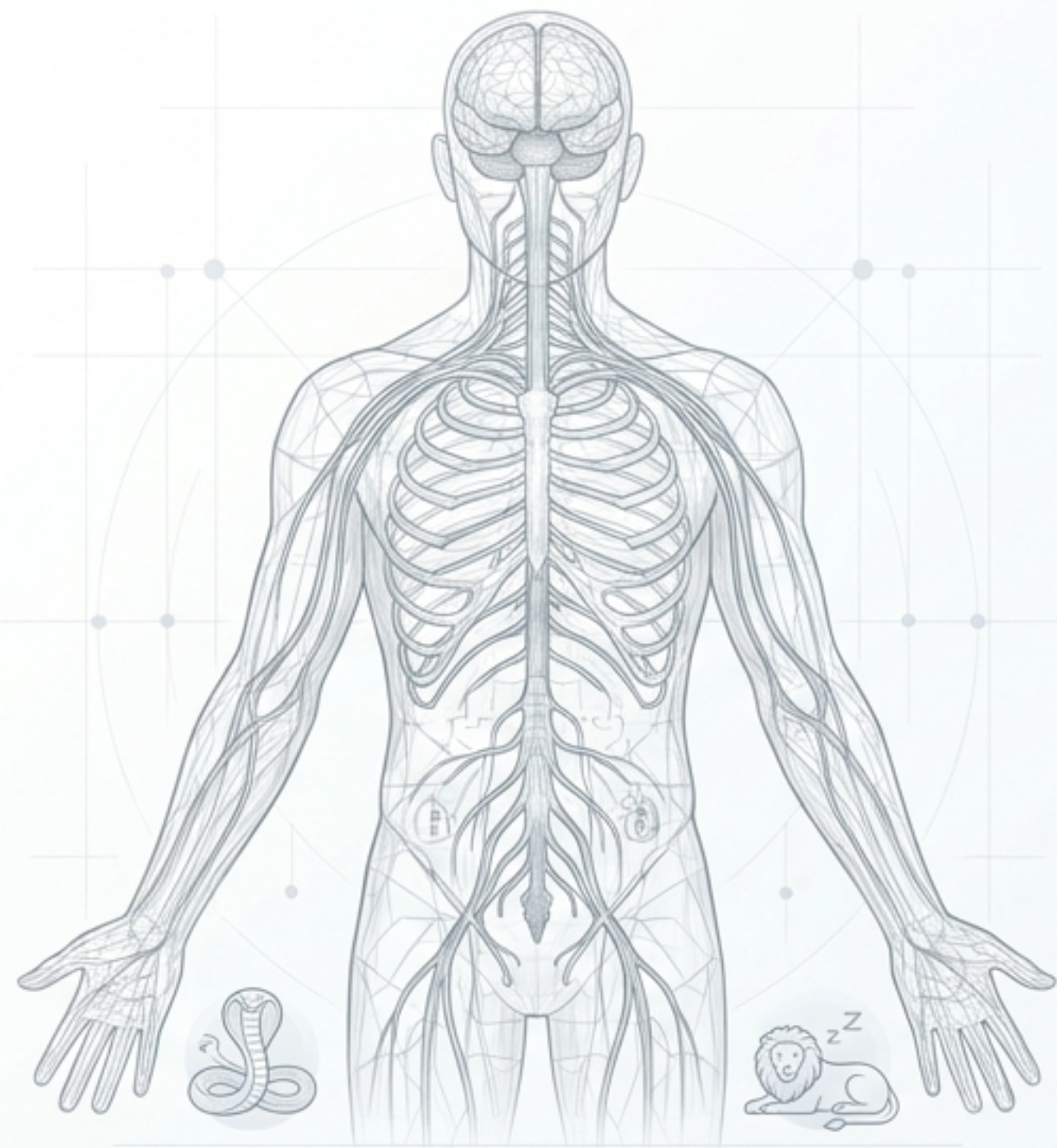
आद्यशक्ति गायत्री: मानव उत्कर्ष का वैज्ञानिक परिपथ

शरीर की देव-शक्तियों के जागरण से भौतिक सिद्धियों तक (अध्याय ५-८ का सार)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि रू से कबानोर का का कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे ज्ञान-जन तक – पूज्य गुरुदेव युगश्रुषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



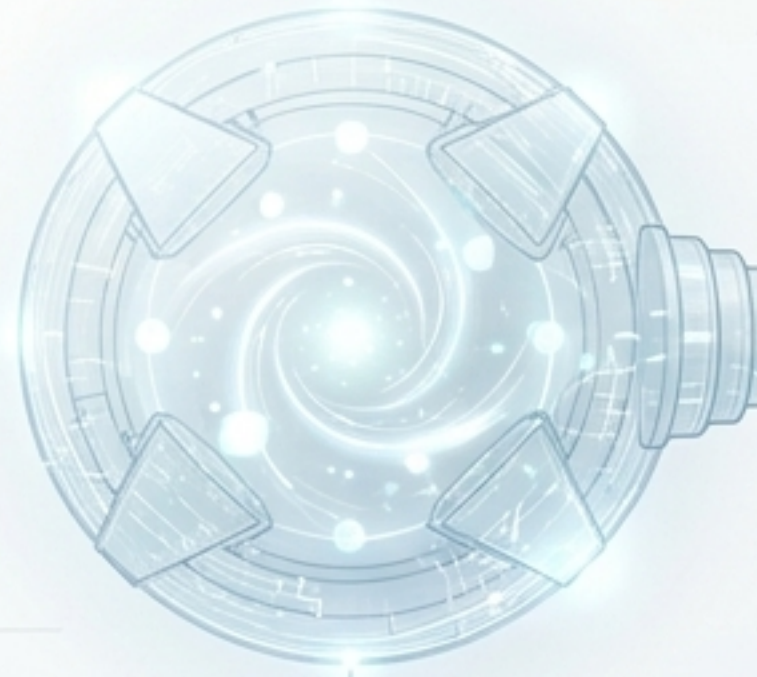
प्रसुप्त अवस्था: शरीर एक दिव्य मन्दिर है जहाँ देव-शक्तियाँ निषिध्य पड़ी हैं। जैसे सोते हुए सर्प या सिंह में पराक्रम नहीं दिखता, वैसे ही हमारी असीमित क्षमताएँ सोई रहती हैं।



जागृत अवस्था: मंत्र साधना इन सुप्त ऊर्जा-केंद्रों को झंकृत करने की 'सक्रियण ऊर्जा' है। चौबीस अक्षर शरीर के मर्मकेंद्रों पर सटीक दबाव डालते हैं।

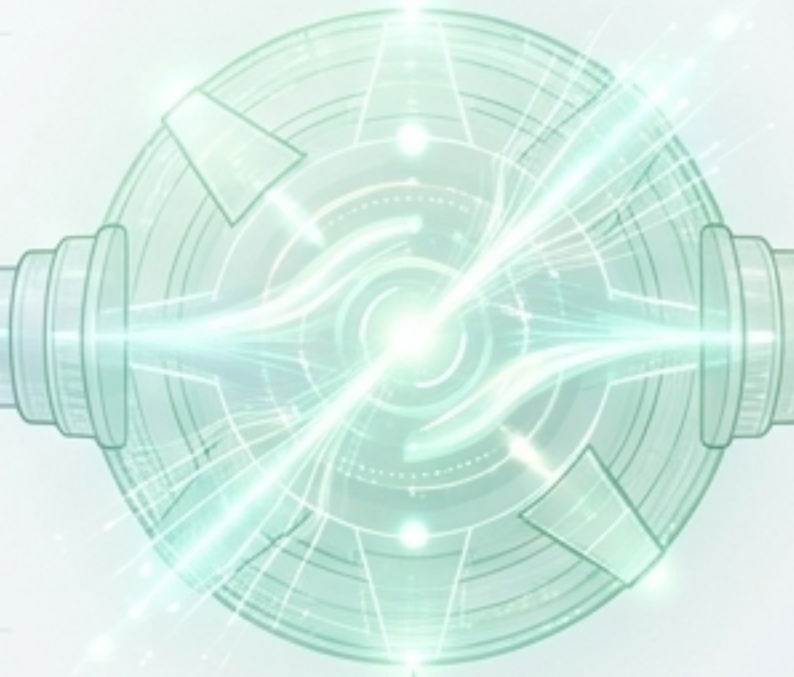
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

१. प्रथम चरण: ओजस्



प्रभाव: शारीरिक ऊर्जा और गतिशीलता।
परिणाम: कठिनाइयों से लड़ने की प्रखर क्षमता।

२. द्वितीय चरण: तेजस्



प्रभाव: देवत्व का वरण।
परिणाम: शालीनता, सज्जनता और भलमनसाहत (चरित्र निर्माण)।

३. तृतीय चरण: वर्चस्



प्रभाव: सामुदायिक सदबुद्धि।
परिणाम: स्वार्थ से ऊपर उठकर सामाजिकता और परमार्थ का भाव।

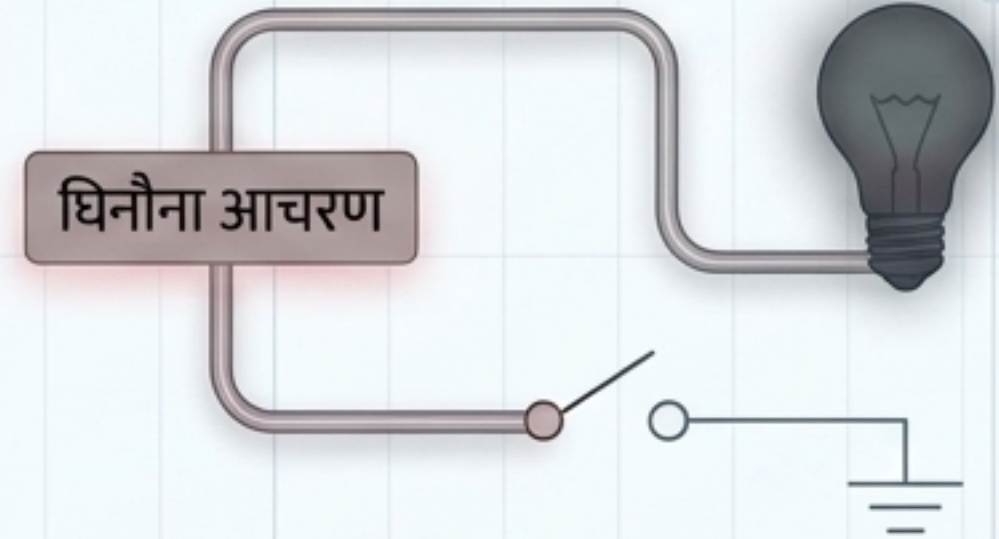
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



Founder's System Note

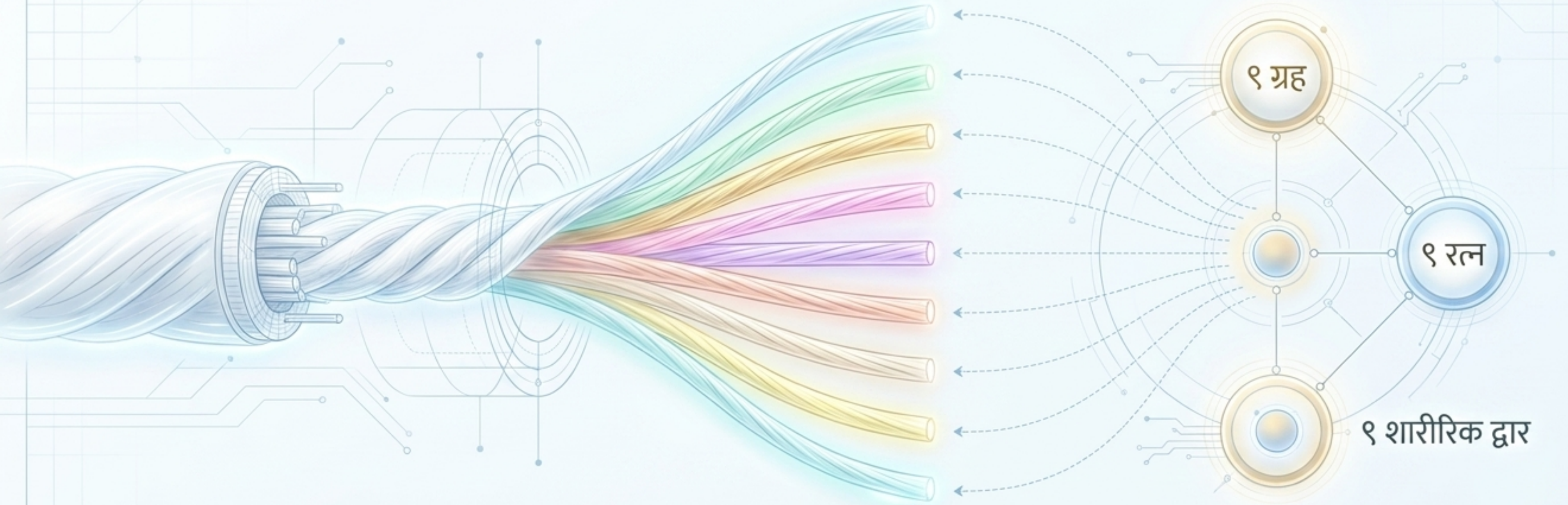
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदभूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



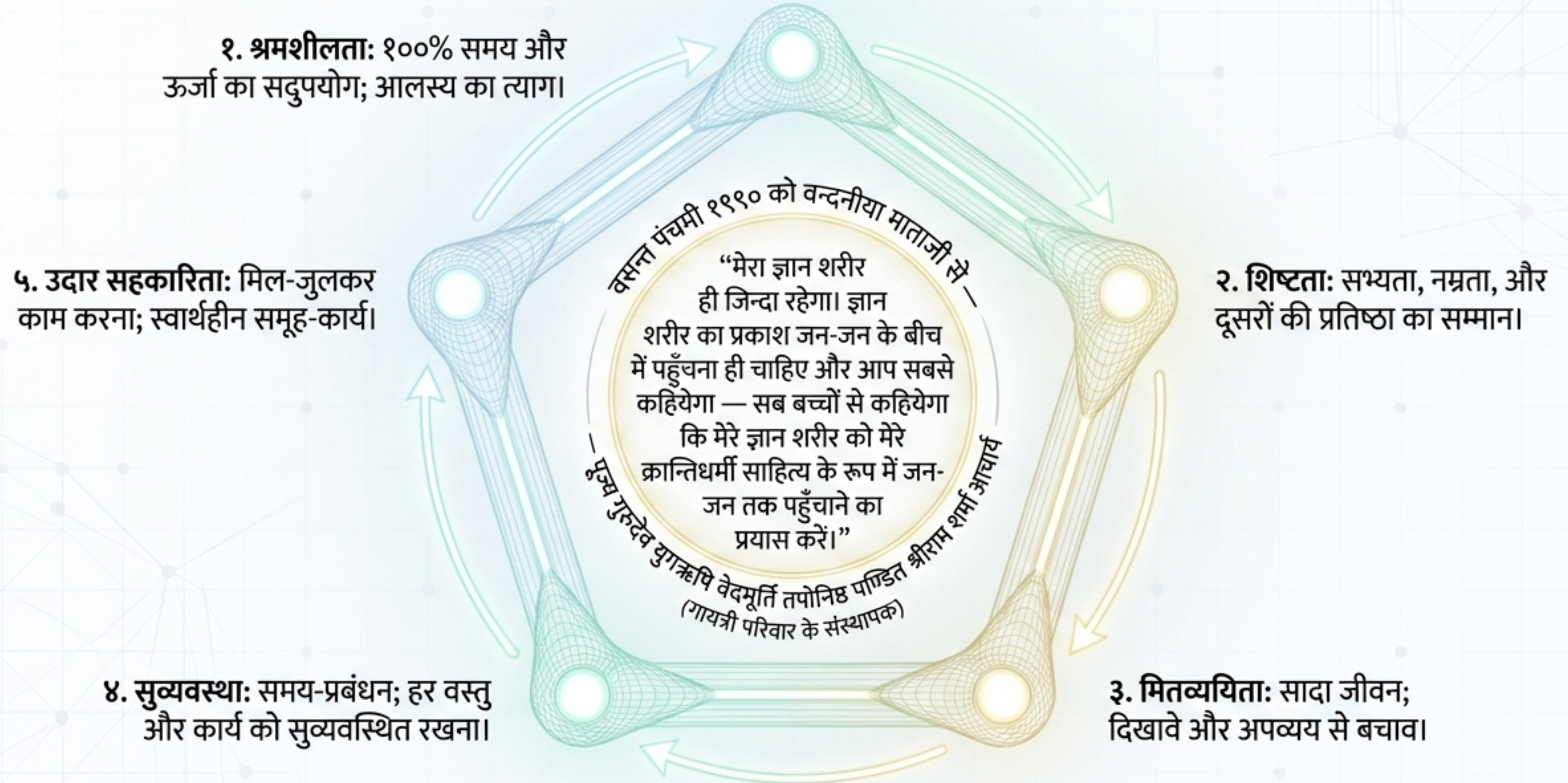
सिद्धि का विज्ञान: भौतिक विज्ञान का नियम है—बिजली के दोनों तार (धनात्मक और ऋणात्मक) मिलने पर ही करंट प्रवाहित होता है।
निष्कर्ष: दर्शन + प्रक्रिया = पूर्णता। मलिन चरित्र और अनगढ़ आचरण के साथ की गई पूजा-पाठ का परिपथ हमेशा 'खुला' (निष्फल) रहता है।

यज्ञोपवीत: मानव गरिमा का 'सॉफ्टवेयर'

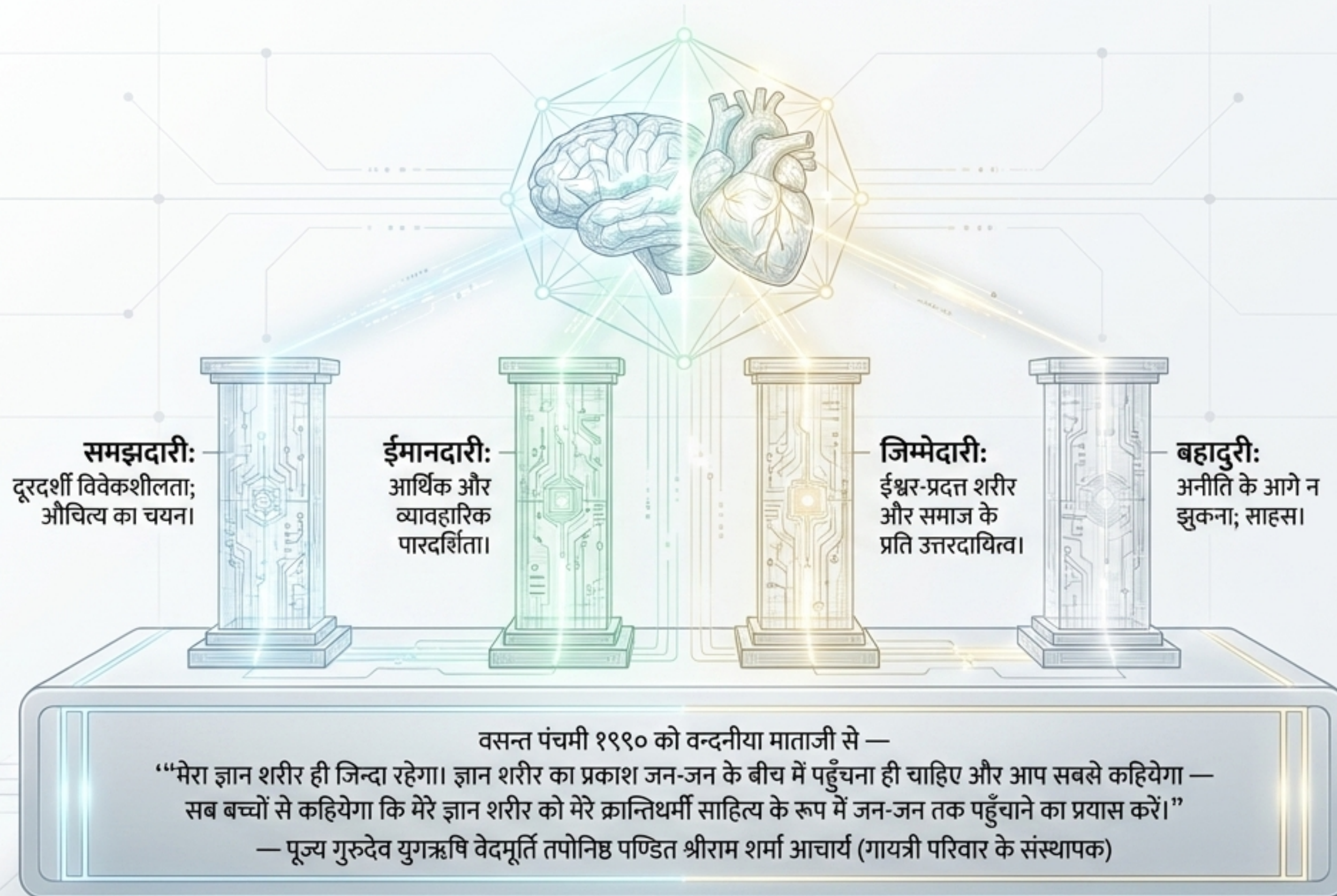


- यज्ञोपवीत मात्र एक धागा नहीं, यह शरीर को 'गायत्री देवालय' बनाने का संकल्प है।
- इसके ९ धागे नौ मानवीय विशिष्टताओं (सद्गुणों) का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह ब्रह्मांड (९ ग्रह) और शरीर (९ द्वार) के बीच का सीधा नेटवर्क संपर्क है।

पंचशील: क्रियापरक अनुशासन परिपथ



देव-सम्पदा: भावनापरक आध्यात्मिक परिपथ



‘सिद्धि’ का वैज्ञानिक यथार्थ

भ्रान्ति 	यथार्थ 
तन्त्र-मंत्र से रातों-रात जादू या चमत्कार होना।	५ कर्मपरक + ४ भावनापरक (९ सद्गुणों) का विकास ही असली गायत्री सिद्धि है।
बिना चरित्र सुधारे, केवल जप से वरदान प्राप्त करना।	विज्ञान का तर्क: गंदे स्थान पर कोई नहीं बैठता, तो दैवी शक्तियाँ मलिन मन में कैसे आएँगी? पहले आत्मशोधन अनिवार्य है। 
गायत्री के ९ शब्द केवल रहस्यमयी ध्वनियाँ हैं।	गायत्री के ९ शब्द महाकाली की ९ प्रतिमाएँ और ९ दिव्य सम्पदाओं के कोड हैं। 

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

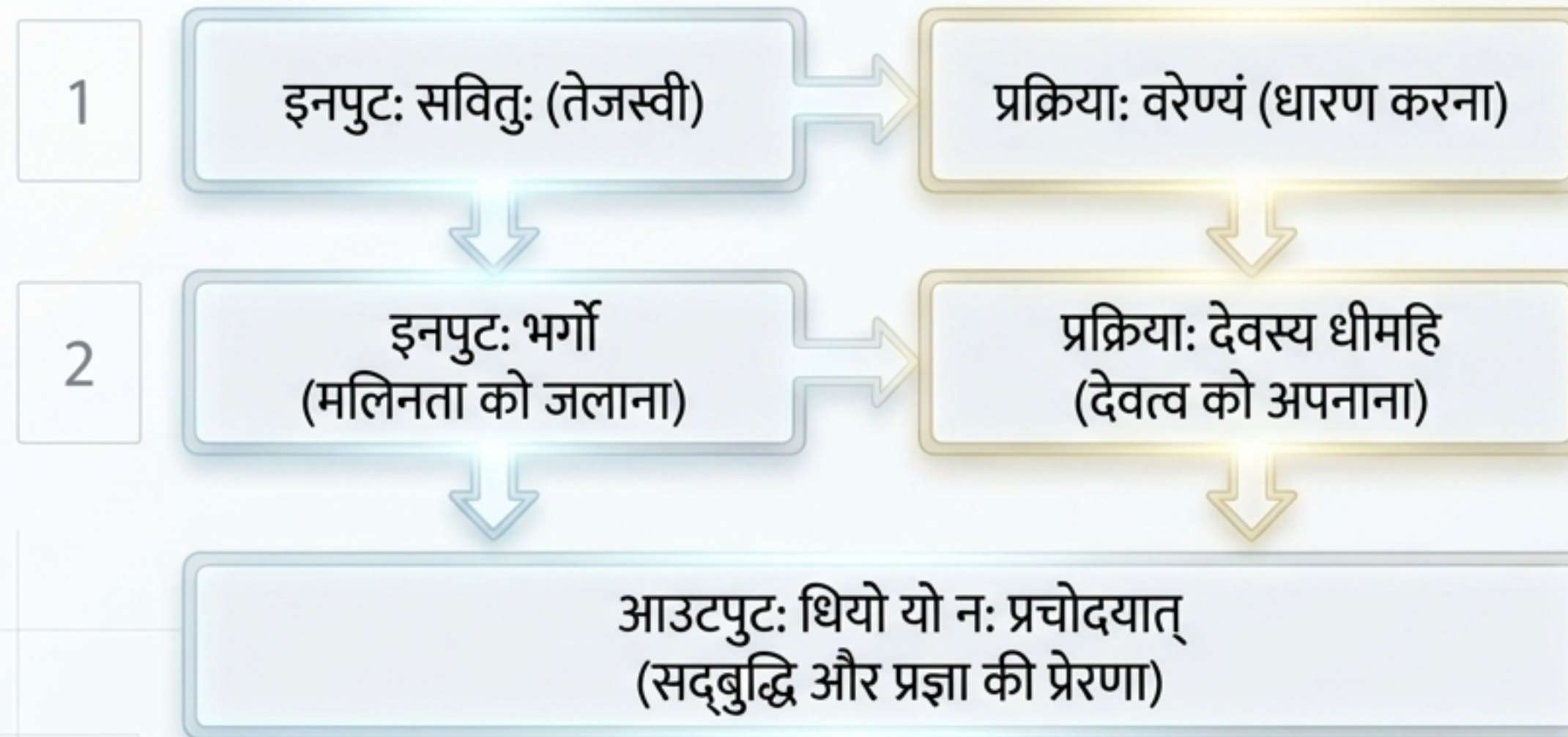
‘ॐ भूर्भुवः स्वः’ का मनोवैज्ञानिक तंत्र



तत्त्वदर्शन: आकाश, पाताल और धरातल—तीनों लोकों में एक सर्वव्यापी न्यायकारी सत्ता की उपस्थिति का अनुभव।

मनोवैज्ञानिक तथ्य: जिस प्रकार न्यायाधीश और पुलिस की प्रत्यक्ष उपस्थिति में कोई अपराध नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर को सर्वव्यापी मानने से अनैतिकता स्वतः समाप्त हो जाती है।

मंत्र का डिकोडिंग परिपथ



निष्कर्ष: यह संसार का सबसे छोटा व समग्र धर्मशास्त्र है।
यह अवांछनीयताओं को जलाकर उत्कृष्टता को स्थापित करने का 'कोड' है।

Sticky Note

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

साधना का अंतिम परिणाम: स्वर्ग और मोक्ष

स्वर्ग का मार्ग: मरने के बाद आसमान में मिलने वाला स्थान नहीं। यह उत्कृष्ट दृष्टिकोण से निर्मित इसी जीवन की 'स्वर्गीय मन:स्थिति और वातावरण' है।

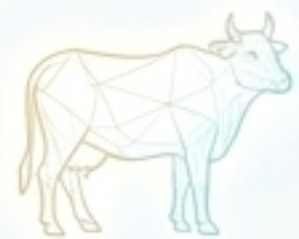
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच पें पहुँचाना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मोक्ष का मार्ग:

मृत्यु का लक्ष्य नहीं। मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं। जीवित रहते हुए ही कषाय-कल्मषों, दोष-दुर्गुणों और कुत्साओं के मानसिक बन्धनों से पूर्ण 'मुक्ति'।

भौतिक सिद्धियों के ऐतिहासिक प्रमाण

गायत्री केवल आत्मिक शांति नहीं,
भौतिक समस्याओं का ठोस समाधान भी है।



महर्षि वशिष्ठ:
नन्दिनी (गायत्री) के माध्यम
से विशाल सेना की त्वरित
भोजन-व्यवस्था।



गौतम मुनि: दुर्भिक्ष
(अकाल) निवारण हेतु माता
गायत्री द्वारा 'अक्षय पात्र'
की प्राप्ति।



श्रृंगी ऋषि: राजा दशरथ हेतु
'पुत्रेष्टि यज्ञ' की सम्पन्नता और
चार देवपुत्रों की प्राप्ति।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” ”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को

चौबीस अक्षरों का ब्रह्मांडीय परिपथ

नारी वर्ग की
२४ महाशक्तियाँ

भगवान् के २४ अवतार

मनोविज्ञान की अष्ट
सिद्धियाँ और नौ ऋद्धियाँ

२४ मूर्द्धन्य ऋषि / देवता

दत्तात्रेय के २४ गुरु

२४

निष्कर्ष: सम्पूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था और ज्ञान-विज्ञान
इस एक महामंत्र के ‘२४ बाइट्स’ में गुंथी हुई है।

मेरे क्रान्तिधर्मी माहिष्मा।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदतपोनिष्ठ पण्डित अर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधामीधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

पूरक प्रौद्योगिकियाँ: गायत्री और यज्ञ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



गायत्री और यज्ञ भारतीय संस्कृति के जनक-जननी (प्रकृति और पुरुष) हैं।

वैज्ञानिक तथ्य: मंत्र का शब्दोच्चारण जब यज्ञ की ऊष्मा के साथ मिलता है, तो वह प्रदूषण निवारण, रोगों के शमन और वातावरण के परिशोधन का शक्तिशाली माध्यम बन जाता है।

निष्कर्ष: मानव उत्कर्ष का आह्वान

साधना का सार: स्वयं को परिष्कृत करें (९ सद्गुण), देवत्व को धारण करें, और विश्व का कल्याण करें।
गायत्री केवल एक मंत्र नहीं, यह जीवन जीने की सर्वोच्च वैज्ञानिक कला और 'ऑपरेटिंग सिस्टम' है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)